मुहावरे

भाषा भावों एवं विचारों को आदान-प्रदान करने का माध्यम है। अपनी बातों को प्रभावशाली ढ़ंग से व्यक्त करने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों के प्रयोग से कई बार साधारण अर्थ वाले शब्दों को भी विशेष अर्थ में प्रकट किया जा सकता है।

जैसे :-

<u>हाथ मलना</u> :- (पछताना) समय निकल जाने पर हाथ मलने से कोई फ़ायदा नहीं है।

1. अक्ल पर पत्थर पड़ना :- (मुर्खता करना) :- शत्रु के पास स्वयं क्यों जा रहे हो, क्या अक्ल पर पत्थर पड़ा हुआ है।

2. अक्ल का दुश्मन :- (मुर्ख) :- उसे समझाने से कोई फायदा नहीं है, वह अक्ल का दुश्मन है।

3. अगर-मगर करना :- (बहाना बनाना) :- जो पूछ रहा हूँ उसका सीधे से जवाब दो इस तरह अगर-मगर करके बात को टाल क्यों रहे हो?

4. अंधे की लाठी :- (एक मात्र सहारा) :- राहुल अपने बूढ़े माता-पिता के लिए अंधे की लाठी है।

5. अँगूठा दिखाना :- (समय पड़ने पर मना कर देना) :- वैसे तो तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त बने फिरते हो पर समय आने पर तुमने भी मुझे अँगूठा दिखा दिया।

6. अंग-अंग मुस्कुराना :- (अति प्रसन्न होना) :- परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने की खबर पाकर मेरा अंग-अंग मुस्कुराने लगा।

7. अपनी खिचड़ी अलग पकाना :- (सबसे अलग रहना) वह अपनी खिचड़ी अलग ही पकाता है तुमसे बात भी नहीं करेगा।

8. अपने मुँह मिया मिट्ठू बनाना :- (अपनी तारीफ स्वयं करना) अपने मुँह मिया मिट्ठू बनाना अच्छी बात नहीं होती है।

9. अपना सा मुँह लेकर रह जाना :- (लज्जित होना) :- राम के बात के गलत साबित हो जाने से वह अपना सा मुँह लेकर रह गया।

10. आकाश पाताल एक करना :- (बहुत परिश्रम करना) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए मैंने आकाश पाताल एक कर दिया।

11. अपने पैरों पर खड़ा होना :- (दुसरों पर अश्रित न रहना) पढ़ाई पूरी होने के बाद वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

12. आकाश-पाताल का अन्तर :- (बहुत अधिक अन्तर होना) दोनों बहनों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर है।

13. अपने पैरों पर कुल्हारी मारना :- (स्वयं अपना नुकसान करना) उससे दुश्मनी कर के तुमने अपने पैरों पर स्वयं कुल्हारी मार ली।

14. आसमान पर चढ़ना :- (घमंड करना) परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के कारण राहुल जैसे आसमान पर ही चढ़ा गया है।

15. आड़े हाथों लेना :- (खरी-खोटी सुनाना) :- देर से घर पहुँचते ही माँ ने मुझे आड़े हाथों ले लिया।

16. आपे से बाहर होना :- (क्रोध में सुध-बुध खो देना) शोभा के गलत शब्द सुनकर उसके पिताजी गुस्से में आपे से बाहर हो गए।

17. अँगूठा दिखाना :- (मना करना) अपने मित्र से मैंने खिलौने माँगें तो उसने मुझे अँगुठा दिखा दिया।

18. आँसू पोछना :- (दिलासा देना) हमारा मित्र दु:खी है। इस समय हमें उसके आँसू पोछने चाहिए।

19. आग में घी डालना :- (क्रोध को भड़काना) दोनों मित्रों की लड़ाई में तुमने आग में घी डालने का काम किया है।

20. आँखों पर पर्दा पड़ना :- (सही-गलत नहीं समझ पाना) तुम्हारी आँखो पर पर्दा पड़ा हुआ है इसलिए तुम्हें अपने बेटे की गलतियाँ नहीं दिख रही हैं।

21. आँख खुलना :- (सच्चाई का पता चलना) :- अपने मित्र से धोखा खाने के बाद ही उसकी आँखें खुली।

22. आँखें चुरा लेना :- (अनदेखा करना) :- तुम्हारे बुरे वक्त में मैंने तुम्हारा साथ दिया और आज जब मुझे ज़रुरत पड़ी तो तुम मुझसे आँखें चुरा रहे हो।

23. आँखों से ओझल होना :- (गायब होना) :- संध्या के समय देखते ही देखते सूरज आँखों से ओझल हो गया।

24. आँखों में धूल झोंकना :- (धोखा देना) :- चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

25. उँगली उठाना :- गलती दिखाना) :- अच्छे लोगो पर कोई भी बिना कारण उँगली भी नही उठा सकता है।

26. उन्नीस बीस का अन्तर होना :- (बहुत कम अन्तर होना) :- दोनों भाइयों के चेहरे में बस उन्नीस बीस का अन्तर है।

27. उल्टी गंगा बहाना :- (कठिन कार्य करना) :- तुम्हारें लिए परिक्षा में पास होना उल्टी गंगा बहाने के समान है।

28. उँगली उठाना :- (दोष देना) :- सबूत नहीं होने पर किसी पर उँगली नहीं उठानी चाहिए।

29. इधर-उधर की हाँकना :- (व्यर्थ की बातें करना) :- इधर-उधर की बातें मत करो, अपने काम पर ध्यान दो।

30. ईंट से ईंट बजाना :- (नष्ट कर देना) :- युद्ध में भारतीय सैनिकों ने दुश्मनों की ईंट से ईंट बजा दी।

31. ईंद का चाँद होना :- (बहुत दिनों बाद दिखना) :- तुम तो ईंद का चाँद हो गए हो, काफी दिनों से मिले नहीं।

32. कान भरना :- (भड़काना, चुगली करना) :- राहुल ने अपने मित्र के खिलाफ आफिस के अधिकारी के कान भरें इसलिए उसे आफिस से निकाल दिया गया।

33. कलम तोड़ना :- (अधिक लिखना) :- रवि ने इम्तिहान में बिल्कुल कलम तोड़ कर लिखा है।

34. कलेजा मुँह को आना :- (बहुत दु:खी होना) :- अपने इकलौते पुत्र को विदा करते समय माँ का कलेजा मुँह को आ गया।

35. कोल्हू का बैल :- (दिन-रात अधिक काम करना) :- गरीब लोग दिन-रात कोल्हू के बैल की तरह काम करते रहते हैं। फिर भी धनी लोग उनकी पूरी मजदूरी नहीं देते हैं।

36. कीचड़ उछालना :- (अपमानित करना) :- तुम्हें बिना बात के किसी के ऊपर
कीचड़ नहीं उछालना चाहिए था।

37. काया पलट होना :- (एकदम बदल जाना) :- शहर जाकर तो इस गँवार रामू की काया ही पलट गई।

38. कलई खुलना :- (भेद खुलना) :- कल स्कूल में झूठ बोलकर छुट्टी ली थी परन्तु आज सबके सामने मेरी कलई खुल गई और मुझे सज़ा दी गई।

39. कोरा जवाब देना :- (साफ़ इन्कार कर देना) :- कल मैंने शोभा से कुछ पैसे उधार माँगे तो उसने कोरा जवाब दे दिया।

40. कमर कसना :- (तैयार होना) :- इम्तिहान पास आ रहा है। उसकी तैयारी करने के लिए कमर कस के मेहनत करनी होगी।

41. कलेजे क टुकड़ा :- (बहुत प्रिय) :- इकलौता बेटा होने के कारण वह अपने माता-पिता के कलेजे का टुकड़ा है।

42. कफन सिर पर बाँधना :- (मरने को तैयार रहना) :- सैनिक युद्ध में कफन सिर पर बाँध कर चलते हैं।

43. कटे पर नमक छिड़कना :- (दु:खी व्यक्ति को और दु:ख देना) :- वह बहुत दु:खी है, तुम उसके कटे पर नमक मत छिड़को।

44. कमर टूटना :- (हिम्मत टूटना) :- इतना परिश्रम करने के बावजूद असफल होने से मानों उसकी कमर ही टूट गई है।

45. कान का कच्चा होना :- (चुगली पर ध्यान देना) :- रोहित अच्छा लड़का है पर कान का कच्चा है।

46. कान पर जूँ न रेंगना :- (किसी बात पर ध्यान न देना) :- इतना समझाने के बाद भी तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगती है।

47. खटाई में पड़ना :- (मुसीबत में पड़ना, उलझन में पड़ना) :- नए शहर में अनजाने लोगों के बीच रहने से तुम तो खटाई में पड़ गए।

48. ख्याली पुलाव पकाना :- (बड़े-बड़े सपने देखना) :- अब ख्याली पुलाव पकाना बंद करो और कुछ काम भी कर लो।

49. खून का प्यासा होना :- (जान लेने पर उतर जाना) :- धन-सम्पत्ति के लालच के कारण दोनों सगे भाई एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए।

50. खून का घूँट पीकर रह जाना :- (गुस्सा सहन कर लेना) :- भरी सभा में अपमानित होकर भी राजा युधिष्ठिर खून का घूँट पीकर रह गए।

51. खरी-खोटी सुनाना :- (भला-बुरा कहना) :- राहुल ने मोनू को खूब खरी-खोटी सुनाई।

52. खून पसीना एक करना :- (कठिन परिश्रम करना) :- परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के लिए मैंने खून पसीना एक कर दिया।

53. गाल बजाना :- (तर्क करना) :- उसकी बातों पर ध्यान मत दो, उसकी तो आदत है गाल बजाने की।

54. गागर में सागर भरना :- (कम शब्दों में अधिक कहना) :- बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

55. गड़े मुर्दे उखाड़ना :- (बीती बातों को याद करना) :- गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई फायदा नहीं है, उन्हें भूल जाओं।

56. गुड़-गोबर होना :- (बनती बात बिगड़ जाना) :- तुम्हारी बेबकूफी के कारण सारा गुड़-गोबर हो गया।

57. एक ही लकड़ी से हाँकना :- (सबके साथ एक समान व्यवहार करना) :- कौन छोटा है, कौन बड़ा है तुम्हें इतना भी ध्यान नहीं रहता है सबको एक ही लकड़ी से हाँकते हो।

58. घर में गंगा बहना :- (सभी सुविधाएँ उपलब्ध होना) :- कॉलेज में दाखिला लेने के लिए तुम्हें कोई परिश्रम नही करना पड़ेगा क्योंकि तुम्हारे मामा जी कॉलेज के प्रोफेसर हैं, तुम्हारी तो घर में ही गंगा बहती है।

59. घाट-घाट का पानी पीना :- (सभी जगहों या क्षेत्र का अनुभव होना) :- तुम्हें हर क्षेत्र की जानकारी है, तुमने तो घाट-घाट का पानी पीया है।

60. घाव हरा होना :- (पुराना दु:ख याद होना) :- तुम्हें देखकर मेरे घाव फिर से हरे हो गए।

61. घुटने टेकना :- (हार मानना) :- भारतीय सेना के सामने शत्रु सेना ने अपने घुटने टेक दिए।

62. घी के दिये जलाना :- (अधिक खुश होना) :- बहुत दिनों के बाद बेटे के सकुशल घर लौट जाने पर माँ ने घी के दियें जलाए।

63. घर सिर पर उठाना :- (बहुत शोर करना) :- बच्चों ने पूरे घर को सिर पर उठा लिया है।

64. घाव पर नमक छिड़कना :- (दु:खी को और कष्ट देना) :- उससे ज्यादा पूछ ताछ करके तुम उसके घाव पर नमक मत छिड़को।

65. चूड़ियाँ पहनना :- (कायर बनना) :- पहलवान होकर भी यदि तुम इस छोटे से आदमी को नहीं हरा सकते तो तुम्हें चूड़ियाँ पहन लेनी चाहिए।

66. चैन की नींद सोना :- (निश्चित होना) :- परीक्षा के बाद विद्यार्थी चैन की नींद सोते हैं।

67. छक्के छुड़ाना :- (बुरी तरह हराना) :- भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

68. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना :- (भयभीत होना) :- पकड़े जाने पर चोर के चेहरे की हवाइयाँ उड़ गईं।

69. चादर से बाहर पैर फैलाना :- (हैसियत से अधिक खर्च करना) :- बेटी की शादी में उसने अपने पैर चादर से बाहर फैला कर खर्च किया।

70. छाती पर साँप लोटना :- (दूसरे की तरक्की देखकर जलना) :- अपने मित्र की सफलता देखकर राहुल की छाती पर मानों साँप लोटने लगे।

71. छठी का दूध याद आना :- (कठिनाई में पड़ना) :- पहलवान से लड़ते समय कुश को छठी का दूध याद आ गया।

72. छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या (जलन) होना) :- राहुल ने इतना अच्छा मकान बना लिया है, इसलिए उसके पड़ोसियों की छाती पर साँप लोट रहा है।

73. छोटा मुँह बड़ी बात :- (अपनी हैसियत से अधिक बोलना) :- छोटा मुँह बड़ी बात करने से पहले अच्छी तरह सोच लेना नहीं तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

74. ज़मीन पर पाँव न पड़ना :- (घमंड होना) :- रूपा अपने आप को बहुत सुन्दर समझती है, इसलिए उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते।

75. जान पर खेलना :- (खतरा उठाना) :- देश को आंतकवादियों से बचाने के लिए वह सैनिक जान पर खेल गया।

76. जान की बाज़ी लगना :- (खतरा उठाना) :- राम ने राहुल को बचाने के लिए जान की बाज़ी लगा दी।

77. ज़हर उगलना (कड़वी बातें करना) :- कम से कम अपने से बड़ों के सामने कभी ज़हर नहीं उगलना चाहिए।

78. जूतियाँ चटकाना (इधर-उधर बेकार फिरना) :- इस तरह सिर्फ जूतियाँ चटकाने से कुछ नहीं होगा तुम्हें कुछ काम करना चाहिए।

79. झक मारना :- (समय को व्यर्थ करना) :- नौकरी से निकाल दिए जाने के बाद वह सारा दिन झक मारता फिरता है।

80. टाँग अड़ाना :- (विघ्न डालना) :- अच्छे काम में टाँग अड़ाना तुम्हारी पुरानी आदत है।

81. टोपी उछालना (बेइज़्जत करना) :- भरी सभा में चाँदनी ने सलमान की टोपी उछाल दी।

82. ठन-ठन गोपाल :- (कंगान होना) :- आजकल उसकी आर्थिक हालत बिलकुल ठीक नहीं है, वह ठन-ठन गोपाल है।

83. ठोकरें खाना (हर तरफ से कष्ट उठाना) :- नौकरी के लिए शोभित इधर-उधर की ठोकरें खा रहा है।

84. डूब मरना :- (लज्जित होना) :- इतना पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी तुम इतने साधारण से सवाल का ज़वाब नहीं दे पाए, तुम्हें तो डूब मरना चाहिए।

85. ताक में रहना :- (मौके की तलाश करना) :- आज बच्चें बस इसी ताक में हैं कि कब उन्हें खेलने का मौका मिले।

86. तूती बोलना (अधिक प्रभाव (यश) होना) :- कक्षा में प्रथम स्थान पाने से पूरी कक्षा में नेहा की तूती बोलती है।

87. थाली का बैंगन :- (किसी एक पक्ष में न रहना) :- तुम तो थाली के बैंगन हो जिधर का पलड़ा भारी होता है, उसी तरफ हो लेते हो।

88. घोड़ें बेचकर सोना :- (गहरी नींद में होना) :- इतना परिश्रम करने से वह थककर घोड़े बेचकर सो गया है।

89. दर-दर फिरना :- (हर जगह भटकना) :- इतना पढ़ा लिखा होने के बाद भी अभी तक वह नौकरी के लिए दर-दर भटक रहा है।

90. दम भरना :- (बड़ी-बड़ी बातें करना) :- वैसे तो राधा सबके सामने अच्छी लड़की होने का दम भरती है परन्तु कल उसने सबके सामने अपने पिता की बात मानने से इनकार कर दिया।

91. दाँत कटी रोटी होना (घनिष्ट मित्रता होना) :- निशा और स्नेहा दोनों दाँत कटी रोटी है, कोई भी इनकी लड़ाई नहीं करवा सकता।

92. दाने-दाने को मोहताज होना :- (अत्यंत गरीब होना) :- जुऐ में सब कुछ हारने के बाद आज राहुल दाने-दाने को मोहताज हो गया है।

93. दिन फिरना :- (भाग्य बदलना)- जबसे राम की नौकरी लगी है, उसके दिन फिर गए हैं।

लोकोक्तियाँ

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँहचढ़े वाक्य लोकोक्ति के तौर पर जाने जाते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभवों का सार होता है।

1. अंत भला तो सब भला:- अच्छे काम का अंत अच्छा होता है।

2. अपनी-अपनी ढ़पली, अपना-अपना राग:- (प्रत्येक का अपना अलग-अलग विचार होना) इस घर में कोई किसी की नहीं सुनता। सबकी अपनी-अपनी ढ़पली, अपना-अपना राग है।

3. अंधों में काना राजा:- (मूर्खों में थोड़ा पढ़ा-लिखा भी विद्वान माना जाता है) इन सब कम पढ़े-लिखे लोगों से तो तुम ठीक हो, जैसे अंधों में काना राजा होता है।

4. अंधा क्या चाहे दो आँखे:- (इच्छित वस्तु का मिलना) शोभा को नौकरी की तलाश थी तभी अचानक उसे स्कूल में नौकरी मिल गई, अंधा क्या चाहे दो आँखें।

5. अघजल गगरी छलकत जाए:- (कम ज्ञान वाले व्यक्ति अधिक दिखावा करते हैं) उसे पढ़ना लिखना अधिक नहीं आता है, परन्तु अधिक पढ़ा-लिखा होने का दिखावा करता है- अघजल गगरी छलकत जाए।

6. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत:- (बीत जाने पर पछताने से क्या फायदा) जब इम्तिहान का समय था तब तुमने पढ़ाई नहीं की और इम्तिहान के बीत जाने के बाद चिंता हो रही है, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

7. अक्ल बड़ी या भैंस:- (बुद्धि के आगे शारीरिक शक्ति का महत्व गौण होता है) कमज़ोर रामा ने बुद्धि के दम पर कुश्ती जीतकर सबको सोचने पर विवश कर दिया कि अकल बड़ी या भैंस।

8. आ बैल मुझे मार:- (जान बूझकर विपत्ति मोल लेना) पहने तो युद्ध में उसे खुद बुलाया और अब डर लग रहा है, यह तो वही बात हो गई आ बैल मुझे मार।

9. आगे कुआँ पीछे खाई:- (सभी तरफ विपत्ति का होना) तुम्हारी बात मानता हूँ तो उससे मार खानी पड़ेगी और अगर उसकी बात मानुँगा तो तुम मुझे नहीं छोड़ोगे। मेरे आगे कुआँ है और पीछे खाई है।

10. आग लगने पर कुआँ खोदना:- (मुसीबत आ जाने के बाद उपाय ढूँढ़ना) पहले तो तुम खेलते रहे और अब जब परीक्षा का समय नज़दीक आ गया है तब तैयारी करने चले हो, आग लगने पर कुआँ खोद रहे हो।

11. अंधेरे घर का उजाला:- (घर का अकेला लाडला) राहुल अपने माँ बाप के अंधेरे घर का उजाला है।

12. ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना:- (कठिन काम शुरू करने के बाद मुसीबतों से डर नहीं लगता) इतने बड़े गुंण्डे को जब सजा दिलवाने की ठान ही ली है तो कष्टों से क्यों घबरा रहे हो, जब ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना ।

13. अपना उल्लू सीधा करना:- (अपना स्वार्थ सिद्ध करना) रोहित हमेशा अपना उल्लू सीधा करने में लगा रहता है।

14. कंगाली में आटा गीला:- (एक कष्ट पर दूसरा कष्ट) एक तो परीक्षा में बैठने नहीं दिया गया ऊपर से स्कूल से निकाल दिया गया यह तो वही बात हो गई - कंगाली में आटा गीला।

15. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे:- (दोषी व्यक्ति का निर्दोष को डाँटना) मैं तुमसे अपने पैसे माँग रहा हूँ और तुम मूझी को डाँट रहे हो-उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

16. खोदा पहाड़ निकली चुहिया:- (अधिक परिश्रम करने पर कम फल मिलना) इतनी मेहनत करने पर भी परीक्षा में कम अंक आए, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

17. कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली:- (दो व्यक्तियों की प्रतिष्ठा में अंतर) तुम कुछ भी कर लो मुझ जैसा बिल्कुल भी नहीं बन सकते – कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।

18. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी:- (मुसीबत के कारण को ही नष्ट कर देना) दोनों परिवारों में इस दीवार को लेकर लड़ाइयाँ हो रही हैं तो इस दीवार को ही तोड़ दो-न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

19. एक पंथ दो काज:- (एक ही काम से दो लाभ) अपने दोस्त से मिलने गया था। वहीं पर उनसे अपने व्यवसाय के लिए कुछ रूपये भी ले लूंगा – एक पंथ दो काज हो गए।

20. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद:- (अयोग्य को किसी मुल्यवान वस्तु की पहचान नहीं होती) तुम्हें नहीं पता यह घड़ी कितनी कीमती है; इसीलिए इसे गंदा कह रहे हो, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

21. घर की मुर्गी दाल बराबर:- (अपनी चीज़ की कोई कद्र नहीं होती) तुम्हारी बड़ी बहन खुद इतनी पढ़ी-लिखी है और तुम पढ़ने के लिए किसी और के पास जाते हो। यह तो वही बात हो गई घर की मुर्गी दाल बराबर।

22. दाल-भात में मूसरचंद:- (हर बात में टांग अड़ाने वाला) हम दोनों आपस में पढ़ाई के विषय पर बात-चीत कर रहे थे कि उसी समय शीला दाल-भात में मूसरचंद जैसी आ गई।

23. साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे:- (काम भी हो जाए और कोई हानि भी न हो) अपने दुश्मन को सज़ा देने का कोई ऐसा उपाए सोचो जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।